प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

B.Com. (HONS)
P3 — A/cs & finance group.
Paper — VI
Cost & Management Accounting.

Date - 13.07.2020

UNIT - I

TOPIC - TOOLS and TECHNIQUES OF MANAGEMENT ACCOUNTING.

निर्णयन प्रबंध का एक आवश्यक अंग है. प्रबंध को दिन-प्रतिदिन अनेक निर्णय लेने होते हैं, जिसके लिए विभिन्न प्रकार की सूचनाओं एवं समंकों की आवश्यकता पड़ती है. इस संदर्भ में प्रबंधकीय लेखांकन प्रबंध को सूचनाएँ उपलब्ध कराने, उनका विश्लेषण करने तथा उनके आधार पर निर्णय लेने के लिए विभिन्न औजारों एवं तकनीकों का प्रयोग करता है. ये तकनीक निम्नलिखित हैं:—

1. **वित्तीय विवरणों का विश्लेषण :—** वित्तीय विवरण अंकों के समूह मात्र होते हैं, जिनका विश्लेषण करना आवश्यक होता है. इसके लिए विभिन्न तथ्यों एवं समंकों के बीच संबंध स्थापित किया जाता है परिणामत: प्रवृत्तियों, परिणामों तथा परिस्थितियों के संबंध में निर्वचन किया जाता है. इसके लिए निम्नलिखित तकनीक का प्रयोग किया जाता है —

(a) तुलनात्मक वित्तीय विवरण
(b) समान माप विवरण
(c) प्रवृत्ति विश्लेषण
(d) अनुपात विश्लेषण
(e) कोष प्रवाह विश्लेषण
(f) रोकड़ प्रवाह विश्लेषण.

Scanned with CamScanner

(2) लागत लेखांकन तकनीक :→ जैसे कि लागत लेखांकन में निर्धारित लागत के आधार पर ही आँकड़े उपलब्ध होते हैं वे कार्यों (Jobs), प्रक्रियाओं, तथा उत्पादों की लागत को निर्धारित करने में सहायक होते हैं। इसलिए यह प्रबंधकीय लेखांकन के प्रमुख होते हैं।

(3) बजटरी नियंत्रण :→ यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें नियोजन एवं नियंत्रण की दृष्टि से बजटों का प्रयोग किया जाता है। कार्यात्मक विभागों के लिए अंतिम रूप से बजट का निर्माण किया जाता है जिसमें व्यय की सीमाएँ और कार्यों के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं

(4) प्रमाप लागत विधि :— यह प्रबंधकीय लेखा विधि की एक महत्वपूर्ण तकनीक है। यह एक ऐसी प्रक्रिया एवं तकनीक है जिसमें लागत के विभिन्न तत्वों के संबंध में प्रमाप लागतों का निर्धारण किया जाता है। इस लागत से वास्तविक लागत की तुलना की जाती है तथा उसके आधार पर कार्य संचालन की कुशलता का निर्धारण किया जाता है। यदि विचरण आता है उसके लिए आवश्यक सुधारात्मक कार्यवाही की जाती है।

(5) सीमान्त लागत :— वह लागत जो उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन होने पर लागत में अंतर के रूप में स्पष्ट होती है उसे सीमान्त लागत कहा जाता है। इस लागत में कुल लागत को दो भागों - स्थिर लागत व परिवर्तनशील लागत में विभाजित किया जाता है। इस तकनीक के आधार पर प्रबंध, लागत, मात्रा एवं लाभ के बीच संबंध स्थापित कर अनेक प्रबंधकीय समस्याओं के संबंध में निर्णय लेता है। जैसे— उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन, बनाओ या खरीदो का निर्णय, एवं विक्रय संवर्धन योजनाओं का मूल्यांकन आदि। —

Scanned with CamScanner

(6) निर्णयन लेखा विधि :— प्रबंध का सर्वाधिक महत्व कार्य निर्णय लेना होता है. अतः प्रबंधकीय लेखा विधि की दृष्टि से उस कार्य के लिए निर्णयन लेखा विधि का प्रयोग किया जाता है. इस लेखा विधि का प्रयोग उस समय किया जाता है. जब एक से अधिक विकल्प हो, और उनमें से एक विकल्प का चयन करना हो. इस लेखाविधि में सीमान्त लागत तथा विभेदात्मक लागत की विशिष्ट भूमिका होती है.

(7) पुनर्मूल्यांकन लेखा विधि :— इस तकनीक का प्रयोग मूल्य स्तर में परिवर्तन की समस्या के समाधान के लिए किया जाता है. इसके अनुसार स्थायी सम्पत्तियों को उनके परम्परागत मूल्य के साथ ही चालू मूल्यों पर भी दिखाया जाता है. जिससे संस्था की वित्तीय स्थिति का उचित एवं सच्चा चित्र प्रस्तुत हो सके.

(8) वित्तीय नियोजन :— व्यवसाय के उद्देश्यों के अनुसार वित्त का प्रबंधन करना वित्तीय नियोजन कहलाता है. इसके अंतर्गत वित्त प्राप्ति के स्रोतों का निर्धारण किया जाता है, ऋण एवं समता पूंजी के बीच अनुपात निश्चित किया जाता है तथा व्यवसाय के लिए दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन ऋणों की सीमा को निश्चित किया जाता है.

(9) नियंत्रण लेखा विधि :— इसके अंतर्गत मुख्यरूप से प्रमाप लेखाविधि एवं बजटरी नियंत्रण दोनों को शामिल किया जाता है तथा आंतरिक रोकथाम, आंतरिक निरीक्षण व अंकेक्षण तथा उत्तरदायित्व लेखांकन की भी व्यवस्था किया जाता है.

(10) **प्रबंधकीय प्रतिवेदन :-** प्रबंधकीय लेखाविधी में प्रबंधकीय प्रतिवेदन एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसके द्वारा समय-2 पर विभिन्न स्थानों और विश्लेषणों के आधार पर प्रबंधकीय प्रतिवेदन तैयार किये जाते हैं। जिससे प्रबंध को व्यवसाय की सही स्थिति समझने, निर्णय लेने व भावी नीति निर्धारण करने में सहायक होती है।

(11) **परिमाणात्मक तकनीक :-** इसके अंतर्गत अनेक ऐसी परिमाणात्मक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है जो गणित और सांख्यिकी पर आधारित होती है। जैसे :- रेखीय कार्यक्रम, संख्यात्मक अनुसंधान, एवं तथ्य विश्लेषण आदि।

Scanned with CamScanner